एक स्वर्ण जयन्ती

१६ अप्रैल, २०१९

आत्मीय पाठकगण,

श्रीगुरुमाई ने मई के पूरे माह को "बाबा जी के माह" के रूप में समर्पित किया है। यह वह समय है जब सिद्धयोगी व नए साधक गुरुमाई जी के श्रीगुरु, बाबा मुक्तानन्द का स्मरण करते हैं व उनका जन्मदिवस मनाकर उनका सम्मान करते हैं। मुझे आपको यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि इस वर्ष बाबा जी के माह के दौरान, हम एक स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं। १२ मई, २०१९ को हम उस दिन की ५०वीं वर्षगाँठ मनाएँगे जब बाबा जी ने अपनी आध्यात्मिक आत्मकथा 'चित्शक्ति विलास' को लिखना आरम्भ किया था।

आध्यात्मिक लेखन के क्षेत्र में 'चित्शक्ति विलास' अद्वितीय है। यह पुस्तक सुस्पष्ट व सजीव व्याख्या है, बाबा जी के ध्यान के अभ्यास के उन्मीलन की जो उन्हें अपने श्रीगुरु, भगवान नित्यानन्द से शक्तिपात दीक्षा प्राप्त करने के बाद हुआ। एक-एक करके, इस पुस्तक के अध्याय हमें उस अद्भुत यात्रा पर ले जाते हैं जिसकी परिणति बाबा जी की सिद्धावस्था की प्राप्ति के साथ होती है। प्रज्ञान व अत्यन्त प्रेम के साथ बाबा जी बताते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अन्तर जगत के गूढ़ ख़ज़ानों को अनावृत किया। वे अपने अन्तर में उदित होते दृष्टान्तों व नादों का वर्णन करते हैं; वे चिति के व्यापक प्रकाश को देखते हैं; वे ब्रह्माण्ड के अलग-अलग सूक्ष्म लोकों की यात्रा करते हैं। वे मन के सच्चे स्वरूप की समझ प्राप्त करते हैं और अपनी आत्मा का अनुभव नीलबिन्दु यानी शुद्ध चिति के बिन्दु के रूप में करते हैं जो ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों की समस्त शक्तियों का स्रोत है।

बाबा जी, भारतीय परम्परा के शास्त्र-ज्ञान से उद्धरण लेते हैं, इस बात की पुष्टि करने के लिए कि ये रहस्योद्घाटन, आध्यात्मिक शक्ति यानी कुण्डलिनी शक्ति के प्रत्यक्ष अनुभव हैं। इसके परिणामस्वरूप, उनके प्रत्यक्ष अनुभव शास्त्रों की सिखावनियों को उजागर करते हैं।

बाबा जी ने कहा था कि उनकी पुस्तक चित्शक्ति की प्रेरणा है; वस्तुतः हिन्दी भाषा में उन्होंने इस पुस्तक को जो नाम दिया, वह है 'चित्शक्ति विलास'। इसका प्रत्येक शब्द, प्रत्येक वाक्य बाबा जी की कृपा की शक्ति से अनुप्राणित है और उन लोगों के लिए बाबा जी की करुणा से ओत-प्रोत है जिनमें ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने और अपने आस-पास के संसार में दिव्यता को देखने की ललक है।

बाबा जी द्वारा 'चित्शक्ति विलास' लिखे जाने की आधी सदी बाद, इस पुस्तक का अनुवाद अठारह भाषाओं में किया जा चुका है और विश्व के सभी भागों में साधक इसे पढ़ते हैं। इस पुस्तक को लिखकर, बाबा जी ने सिद्धयोग सिखावनियों व अभ्यासों की परम्परा में एक ऐतिहासिक योगदान दिया है।

आदर सहित,
स्वामी शान्तानन्द
सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

'चित्शक्ति विलास', सिद्धयोग बुकस्टोर पर उपलब्ध है।